[Shri Vasant Sathe]

to take it from the States. I assure, you, Mr. Parulekar, you bring this Bill, which requires a small Constitutional amendment, we will support that. Or if you agree I am willing to bring it provided you say that you will support this. This will solve the problem of the really helpless to take them out of the clutches of the black-money in which this whole industry is caught. As I said the other day, the rate of interest, you will be surprised, has gone up from 40 to 60%. Now, which kind of money is that ? My friends are saying why are good films not produced ? Why are films with social purpose not produced ? It is because of the law of demand and supply in the clutches of which you have got in, which I know is the symptom of a capitalist structure of the economy and which best symbolises.

MR. CHAIRMAN : Mr. Minister, would you like to continue ?

SHRI VASANT SATHE : Yes, Sir, I would like to continue tomorrow.

16.00 hrs.

DISCUSSION *RE* TRAGIC DEATH OF 45 PERSONS AND INJURIES TO SEVERAL OTHERS AT THE QUTAB MINAR ON DECEMBER 4, 1981.

MR. CHAIRMAN : The House will now take up discussion under Rule 193 on the Statement made by the Minister of Home Affairs in the House on 4th December, 1981, regarding tragic death of 45 persons and injuries to several others at Qutab Minar, Delhi on 4th December, 1981. Shri Vajpayee will raise the discussion.

श्री अटल बिहारी वाजपेयी (नई दिल्ली) : सभापति महोदय, 4 दिसम्बर, 1981 का दिन दिल्ली में हमेशा याद किया जाएगा। कुतुब मीनार जो पर्यटन स्थल है, ऐतिहासिक महत्व का स्थल है, जहां बहुत बड़ी संख्या में लोग आनन्द के लिए जाते हैं, वही कुतुब मीनार उस दिन मौत की मीनार में बदल गयी।

सभापति महोदय, मौत के कई रूप हैं, कई रंग हैं। मगर ऐसी दर्दनाक मौत ! छोटे-छोटे बच्चे जिन्होंने अभी जिन्दगी को पूरी तरह देखा भी नहीं था, दम घुट कर मर गये, कुचल दिये गये, कोई सहायता नहीं पा सके। मौत अपने में शोक की छाया फैलाती है लेकिन जब ऐसी मौत हो जाए तो हम उन बच्चों के माता-पिताओं का थोड़ा-सा ख्याल करें। हरियाणा के बच्चे आये थे और बड़े उत्साह से आये थे कि कुतुब मीनार देखेंगे, दिल्ली की सैर करेंगे। वे बच्चे वापस नहीं जा सके। क्या अपराध था उन बच्चों का ? कुतुब मीनार टूटी नहीं है, कुतुब मीनार पर बिजली नहीं गिरी है। दिल्ली में भूकम्प नहीं आया है। एक ऐसी दुर्घटना हुई जिसे टाला जा सकता था, जिसे टाला जाना चाहिए था। दुनिया को हम लोग क्या मुंह दिखायेंगे ?

सभापति महोदय, मैं इसे राजनीति का रूप नहीं देना चाहता। मगर जिन के हाथ में शासन है वे इस दोष से नहीं भाग सकते। उन्हें जनमत के कटघरे में खड़ा होना होगा। केवल शोक प्रकट करना काफी नहीं है। जो जिन्दगियां चली गयीं, वे वापस नहीं आ सकतीं। किसी की जिन्दगी की कीमत पांच हजार रुपये में नहीं तोली जा सकती। हर चीज़ का जवाब देना होगा।

मुझे अफसोस है कि गृह मंत्री ने जो बयान दिया, उस से मुझे एक बात समझ नहीं आयी। मैं उनकी शिकायत इस के लिए नहीं

कर रहा हूं कि उन्होंने सारे सदन को शोक में शामिल क्यों किया ? मगर उन्होंने अपने बयान में ऐसी बातें की हैं जो कि उन्हें नहीं करनी चाहिएं थीं। वे मामले को प्रीजज करते हैं। वे कहते हैं कि बिजली चली गयी थी, इससे दुर्घटना हुई। इस मुद्दे पर बहस हो रही है कि बिजली गयी थी या नहीं गयी थी, या गुल कर दी गयी थी। कार्पोरेशन ने बयान दिया है कि बिजली गयी थी मगर उस समय तक ठीक हो गयी थी। मगर गृह मंत्री जी के बयान के सामने अब दबाव लाया जा रहा है।

मैं भी उस दिन वहां गया था। चौकीदार ने मुझे कहा कि बिजली अचानक चली गई। मगर आसपास के इलाकों में उस समय बिजली नहीं गई थी। अब बयान आ रहे हैं। गृह मंत्री बयान दे चुके। गृह मंत्री ने सुनी सुनाई बात पर सारे मामले का फैसला कर दिया। गृह मंत्री केवल शोक प्रकट करके अपना बयान समाप्त कर सकते थे और कह सकते थे कि ज्यूडिशियल इन्क्वायरी करने जा रहे हैं और मैं इस बारे में और कुछ नहीं कहूंगा।

सभापति महोदय, इतना बड़ा ऐतहासिक स्थल है कुतुब मीनार। बिजली का आना-जाना तो इस शासन में चलता रहता है, लेकिन बिजली चली जाए तो ऐसे स्थान के लिए क्या जनरेटर का प्रबंध नहीं किया जा सकता ? देश के लोग आते हैं, विदेशी आते हैं, लेकिन प्रबंध नहीं किया गया, मगर मैं यह मानने के लिए तैयार नहीं हूं कि सारी दुर्घटना इस लिए हुई क्योंकि बिजली चली गई। कुतुब मीनार जब बनी तो बिजली नहीं थी, हम लोग एक बार गए तब बिजली नहीं थी, लेकिन अगर आने-जाने को ठीक तरह से नियंत्रित किया जाए और अंदर थोड़े से प्रकाश की व्यवस्था की जाए, बिजली के अलावा और साधनों से भी व्यवस्था की जा सकती है तो इस प्रकार की दुर्घटना को टाला जा सकता था। लेकिन गृह मंत्री महोदय ने एक प्रमाण-पत्र दे दिया, सब को प्रमाण-पत्र दे दिया—पुलिस, फायर, एंबुलेंस सर्विसेस—

They were immediately rushed to the hospitals.

साढ़े ग्यारह बजे दुर्घटना हुई, भगदड़ मची और लोग मारे गए। गृह मंत्री महोदय ने माना है। पुलिस कितने बजे पहुँची ? आज शिक्षा मंत्री ने राज्य सभा में बयान दिया है और वह बयान ठीक है। वहां पर कंजरवेशन असिस्टेंट था। उन्होंने 11.35 पर टेलीफोन किया मगर 12.30 पर महरौली का पुलिस-इन्स्पेक्टर वहां पहुँचा। दुर्घटना हुई 11.30 पर और वहां से थोड़ी दूरी पर ही पुलिस-स्टेशन है। जिस समय दुर्घटना हुई, उस समय एक पुलिस वाला था, उसकी चर्चा मैं बाद में करूंगा। क्या एक किलोमीटर का रास्ता तय करने के लिए 45 मिनट चाहिएं ? एक सब इन्स्पेक्टर पहुँच गए, मगर एस. एच. ओ. कहां थे ? महरौली पुलिस स्टेशन के आफीसर भीम सिंह कहां थे ? वे ढाई बजे घटना-स्थल पर पहुँचे। कहां थे, क्या कर रहे थे, इसका पता करने का प्रयत्न किया गया ? फ्लाइंग स्क्वाड 12.45 पर पहुँचा और फायर ब्रिगेड 12.55 पर पहुँचा। जो लोग मारे गये थे या घायल हो गये थे वे टूरिस्ट बसों में और प्राइवेट कारों में गए हैं और गृह मन्त्री महोदय कहते हैं कि जैसे ही घटना की खबर मिली—सब पहुँच गए। यह बयान तथ्यों पर आधारित नहीं है। मैं जानता हूं कि गृह मन्त्री महोदय को जो कुछ बताया गया, वही उन्होंने आकर सदन में

[श्री अटल बिहारी वाजपेयी]

कह दिया। ऐसी बात नहीं कहनी चाहिए थी, जब ज्यूडीशियल इन्क्वायरी आर्डर की जा रही है। उनका बयान तथ्यों से मेल नहीं खाता।

एक बात उन्होंने और कही और जो बात शिक्षा मन्त्री ने आज राज्य सभा में कही, उससे वह टकराती है। सभापति महोदय, यह सरकार एक है, सदन दो होंगे मगर सरकार एक है, इसका कोई ज्वाइन्ट रेसपोंसिबिलिटी है या नहीं है? शिक्षा मन्त्री ने आज राज्य सभा में जो बयान दिया और गृह मन्त्री ने उस दिन जो कुछ कहा, उसमें अन्तरविरोध है। हम किसको सही मानें? गृह मन्त्री ने उस दिन सारा दोष बिजली गुल होने पर डाल दिया था और कह दिया था दुर्घटना हो गई बड़ा अफसोस है लेकिन आज शिक्षा मन्त्री महोदया ने राज्य सभा में बिजली को भी दोषमुक्त कर दिया है और उन्होंने सारा दोष हरियाणा से आए हुए बच्चों पर डाल दिया है। उन्होंने कहा :

"At this time about sixty students from M. D. College Nuh Faridabad District, came to see the gate. The monument attendants stopped them and requested them to wait since there was no electricity inside the monument. But the students forced their way into the Minar and started running on the stairs. Subsequent sequence of events is not quite clear."

आगे जो कुछ हुआ उसके बारे में शिक्षा मन्त्री महोदया स्पष्ट नहीं हैं, वह कह नहीं सकती हैं कि अन्दर क्या हुआ। लेकिन इसके बारे में वह स्पष्ट हैं कि चौकीदार ने रोका, लड़के नहीं माने, सरकार को दोष नहीं दे सकते हैं, चौकीदार पर लांछन नहीं है—पुलिस ने प्रबन्ध नहीं किया, यह शिकायत मत करो। लड़के बिगड़ गए। लड़के मौत के मुंह में कूदना चाहते थे। हमने रोकने की कोशिश की। लेकिन जो मरने पर तुला हुआ था उसको कौन रोक सकता था। शिक्षा मन्त्री महोदया एक मां हैं। किसने उन्हें सलाह दी यह बात यहां रखने की? सारा मामला ज्यूडीशियल इंक्वायरी कमीशन के सामने है। हम अगर आपसे सवाल पूछें तो समझ में आ सकता है लेकिन आपने वही गलती की जो गृह मन्त्री ने लोक सभा में की थी। किसके बयान पर यह बात आधारित है कि बच्चे घुसना चाहते थे? बच्चे घुसना चाहते थे तो दरवाजे से ही घुसना चाहते थे और अगर दरवाजे से ही घुसना चाहते थे तो ऊपर गड़बड़ कैसे शुरू हो गई? अगर नीचे से घुसने के कारण धक्कम धक्का हुआ होगा तो ऊपर के लोग कैसे नीचे भाग रहे थे, उन्हें खिड़कियों के रास्ते से कैसे निकालना पड़ा? लोग ऊपर तक भरे हुए कैसे पाए गए? शिक्षा मन्त्री महोदया ने बयान दे दिया है। कमीशन अब क्या करेगा? उस पर सुप्रीम कोर्ट का जज भी नहीं है। उन पर मुझे कोई आपत्ति नही है। लेकिन वह हाई कोर्ट का सिटिंग जज भी नहीं है। वह इन कैमरा इंक्वायरी कर रहे हैं। पब्लिक इन्क्वायरी क्यों नहीं? किस बात पर आप पर्दा डालना चाहते हैं? वह कमीशन क्या करेगा? आपने देखा होगा। शनिवार को वह कुतुब मीनार गया था। आर्कियोलौजीकल डिपार्टमेंट के लोग वहां पर नहीं थे। घर पर खबर भेजी गई कि उनको बुलाओ लेकिन घरों पर भी नहीं थे। अगर यह खबर जो अखबार में छपी है गलत है तो आप इसको कण्ट्रेडिक्ट करें। कमीशन क्या करेगा? सारी सरकारी मशीनरी लगी हुई है सच्चाई पर पर्दा डालने के लिए। गृह मन्त्री का बयान सिद्ध करने के लिए। अब उसको दोहरा प्रयत्न करना पड़ेगा। शिक्षा मन्त्री के बयान को भी सिद्ध करना पड़ेगा।

मैं भी उस दिन वहां गया था। शायद वह दृश्य मैं जिन्दगी भर नहीं भूल सकता। लाशें तो वहां से जा चुकी थीं। लेकिन कुतुब मीनार के नीचे कपड़ों का ढेर लगा था। उसमें जूते पड़े थे। एक छोटा सा टिफिन कैरियर भी पड़ा था। कपड़ों में अण्डरवीयर थे, स्कर्टस थीं। लाशें दब गईं। बच्चों को निकालने में शायद कपड़े फट गए होंगे। फटे हुए कपड़ों का वहां ढेर लगा था।

कल हमारा एक अध्ययन मण्डल कुतुब मीनार के भीतर गया था। उनकी रिपोर्ट यह है और मैं चाहता हूं कि ज्यूडिशियल कमीशन इस बात की गहराई से जांच करे कि सारे मामले को छिपाने के लिए अब एक कहानी गढ़ी जा रही है कि जो बच्चे गए थे वे अपने साथ क्रेकर लेकर गए थे, उनके साथ दियासलाई भी थी और उनमें से किसी बच्चे ने वहां क्रेकर चलाने की कोशिश की। सीढ़ियों पर छोटे-छोटे पटाखे पड़े हुए थे। दियासलाई पड़ी हुई थी। हमारा अध्ययन दल देखकर आया है। इसकी जानकारी शिक्षा मन्त्री और गृह मन्त्री को अभी नहीं है, नहीं तो यह तीसरा बहाना भी गढ़ दिया जाता।

मैंने उन लोगों से बात की है जो वहां मौजूद थे।

सभापति महोदय, एक चौकीदार था। शिक्षा मन्त्री का यह बयान ठीक नहीं है। मैं नहीं जानता कितने लोग वहां रहते हैं। उस दिन शुक्रवार था, शुक्रवार को जाने के लिए कुतुब मीनार पर कोई टिकट नहीं होता है। मैं पूछना चाहता हूं शुक्रवार के इन्तजाम और अन्य दिनों के इन्तजाम में कोई फर्क है, या एक ही तरह का इन्तजाम है? अगर टिकट नहीं है तो लोग ज्यादा आयेंगे। दिल्ली में व्यापार मेला हो रहा है और इस समय पर्यटक बड़ी संख्या में आये हैं, विदेशी भी वहां जाते हैं। सभापति महोदय, एक चौकीदार था, एक चौकीदार के रोकने से शायद लड़के नहीं रुक सकते, मैं मानता हूं कि चौकीदार ने रोका होगा कि भीड़ हो रही है आप न जाइये? कोई पढ़ा लिखा आदमी वहां क्यों नहीं था? कोई ऊंचे दर्जे का अफसर क्यों नहीं था? अजन्ता, इलोरा में इन्तजाम है जब कि वहां संकरी जगह नहीं है, खुला स्थल है। क्या आर्कियोलाजिकल डिपार्टमेंट का कोई अफसर था दरवाजे पर? अगर सचमुच अन्दर भीड़ थी और बच्चों को कोई प्यार से समझाता तो बच्चे मौत की छलांग लगाने के लिये नहीं आये थे, प्यार से समझाने पर बच्चे मान जाते। बच्चों के साथ अध्यापक भी थे, उन दोनों अध्यापकों से मैंने बात की। उन का बयान आप के द्वारा दिये गये वर्णन से मेल नहीं खाता। अब उन पर दबाव डाला जाय यह बात अलग है।

सभापति महोदय, आप जानते हैं इतना बड़ा कामप्लैक्स है कुतुब मीनार का। उस दिन वहां एक सिपाही था जिस का नाम है श्री ओम प्रकाश। दिल्ली में अपराध बढ़ रहे हैं आपके आंकड़े कुछ भी कहें। असुरक्षा की भावना बढ़ रही है, महिलाओं को छेड़ने की घटनायें बढ़ रही हैं। कई बार इस तरह के मामले हो चुके हैं, समाज विरोधी तत्व ऐसे समय पर सक्रिय हो जाते हैं। मैं इसको राजनीतिक रूप नहीं दे रहा हूं। क्या यह आवश्यक नहीं था कि अच्छा प्रबन्ध किया जाता? अधिक पुलिस वाले वहां तैनात किये जाते? यह किसकी जिम्मेदारी है? एक पुलिस वाला था। ज्यादा पुलिस वाले क्यों नहीं थे। आर्कियोलाजी डिपार्टमेंट

[श्री अटल बिहारी वाजपेयी]

के अधिक अफ़सरान क्यों नहीं थे? अफ़सरों को आने में देर क्यों हुई ?

सभापति महोदय, यह पहला मामला नहीं है जब कि कुतुब मीनार के बारे में यह शिकायत आयी है कि कुछ गुंडे बदमाश अन्दर चले जाते हैं, खिड़कियों में बैठ जाते हैं, जो लड़कियां देखने जाती हैं उन्हें छेड़ने की कोशिश करते हैं। 15 अगस्त को इस तरह की एक घटना हो चुकी है। मुझे मालूम है सरकार उसका खंडन करने वाली है। रिपोर्ट लिखी नहीं जाती, मगर हम लोगों को पता लगा कि 15 तारीख को ऐसी घटना हुई थी। जब भीड़ होती है ऐसे तत्व सक्रिय हो जाते हैं। आखिर उस विदेशी महिला मैंगी की आंसू भरी कहानी का क्या जवाब है ? केवल बिजली चली गई इतना ही नहीं है। प्रत्यक्षदर्शियों ने मुझे बताया है कि उसकी स्कर्ट तार-तार कर दी गई थी। जो अन्डरवीयर है वह पैरों में उलझा हुआ था। यह भीड़ में दबने से नहीं हो सकता है। ऊपर शरारत हुई, लड़कियां चिल्लायीं, भगदड़ मची और यह दुखद कांड हो गया। मैं जैकी को कान्टेक्ट नहीं कर सका हूं, उसकी एक और सहेली भी थी, मैं नहीं जानता वह कहां है। मगर जो अस्पताल में भर्ती हैं उनसे मैंने बातें की, अध्यापकों से चर्चा की। मगर आप देखें उसी दिन से लीपा पोती शुरू हो गई।

"Balwant Singh, Deputy Commissioner of Police, on Friday night claimed that the police reached Qutab within 10 minutes of the reporting of the stampede. He also denied the allegation of molestation of some foreign women leading to the tragedy."

समाचार-पत्र वालों ने विदेशी महिलाओं से बात की है। उस विदेशी महिला की तस्वीर भी छपी है वह बस में ले जायी जा रही है। दुखी है, मगर लज्जा से सर नहीं उठा सकती। दबी जबान में उसने आरोप लगाया है कि मुझे छेड़ने की कोशिश की गई। एक घंटे तक मैं वहां फंसी रही। यह पार्टी का मामला नहीं है तिवारी जी, नाराज न हों।

प्रो० के० के० तिवारी (बक्सर)। यह पार्टी का मामला नहीं है, मैं मानता हूं।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : सभापति महोदय, शिक्षा मंत्री ने ठीक कहा है कि 750 साल हो गए, यह पहली घटना हुई है। लेकिन क्या यह घटना ऐसी है, जिसे टाला नहीं जा सकता था ? हमें जो कुछ प्रबन्ध करना चाहिए था, क्या हमने वह प्रबन्ध किया ? क्या शिक्षा मंत्री संतुष्ट हैं ? वह मां हैं, वह एक मां के दिल से कह दें, मैं सारे आरोप वापिस ले लूंगा। प्रधान मंत्री सदन में नहीं हैं। एक रेल-दुर्घटना हो गई, तो शास्त्री जी ने त्याग-पत्र दे दिया। देवली में 22 लोग मारे गए, तो उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री ने कहा कि मैं महीने भर में अपने पद से हट जाऊंगा। लेकिन 47 बच्चे दिल्ली में कुचल कर मर गए, किसी ने खड़े हो कर नहीं कहा कि यह मेरी नैतिक जिम्मेदारी है, मैं पद पर नहीं रहूँगा। कोई कहने को तैयार नहीं है—गृह मंत्री नहीं कहेंगे, शिक्षा मंत्री नहीं कहेंगे, लेफ्टिनेंट गवर्नर नहीं कहेंगे, पुलिस कमिश्नर नहीं कहेगा। दिल्ली का कोई पुरसां-हाल नहीं है। दिल्ली का भाग्य इन लोगों के हाथ में है। दिल्ली में चुनी हुई विधान सभा नहीं है। दिल्ली की जनता को उसके अधिकार से वंचित कर दिया गया है। दिल्ली में चुनी हुई मेट्रोपोलिटन कौंसिल नहीं है, कार्पोरेशन नहीं है। समाज विरोधी तत्वों

को संरक्षण दिया जा रहा है, जोकि खुल कर सामने आया है।

जो कुछ हुआ है, किसी न किसी को उसकी जिम्मेदारी लेनी चाहिए। किसकी जिम्मेदारी है? मैं नैतिक जिम्मेदारी की बात कर रहा हूं। किसी की नहीं है?—अगर किसी की नैतिक जिम्मेदारी नहीं है, तो इस देश का भविष्य अन्धकारमय है, यह कह कर मैं अपनी बात समाप्त कर देना चाहता हूं।

सभापति महोदय : क्या गृह मंत्री या शिक्षा मन्त्री इस स्टेज पर कुछ कहना चाहते हैं?—नहीं। श्री एच० के० एल० भगत।

श्री एच० के० एल० भगत : (पूर्वी दिल्ली) : सभापति महोदय, यह बहुत दर्दनाक घटना हुई है और इससे सारे देश को बहुत तकलीफ हुई है। छोटे-छोटे बच्चे दिल्ली देखने आये थे, मगर उनकी लाशें लौटीं। यह स्वाभाविक है कि इससे सब जगह लोगों के मन में तकलीफ हो।

कुतुब मीनार एक इन्टरनेशनल इम्पार्टेन्स की जगह है, जहां विदेशी भी आते हैं, दुनिया भर के लोग आते हैं। सब सोचते हैं कि दिल्ली जाकर कुतुब मीनार देखना चाहिए। जाहिर है कि इस हादिसे से लोगों को तकलीफ तो हुई, लेकिन इसके साथ-साथ हमारे प्रेस्टीज को भी बड़ा जबर्दस्त धक्का लगा है। कई घरों के चिराग बुझ गए, कई माएं रो रहीं हैं। चारों तरफ एक तरह से सन्नाटा सा छा गया है।

इस वाकये ने हमारे सामने फिर कुछ सवाल पोज किए हैं, जिन पर हम सब को राष्ट्र के नागरिकों के नाते सोचना चाहिए। मैं साफ कर दूं कि इस सवाल पर किसी प्रकार के पार्टी दृष्टिकोण से या पार्टी एंगल से सोचना मैं पाप समझता हूँ। अगर इस सवाल को किसी पार्टी एंगल से या पार्टी दृष्टिकोण से देखा जाएगा तो वह बहुत बड़ा पाप होगा। ऐसा नहीं करना चाहिये। जो भी चोरी-छिपे किसी पार्टी एंगल से जिम्मेदारी से बचना चाहे, या पार्टी एंगल से अपनी पार्टी के लिए फायदा उठाना चाहे, वह देश के लोगों की नजरों में बड़ा पापी होगा। इस घटना ने यह बात साफ की है कि हमें इन पुरानी इमारतों को जिस तरह से मेनटेन करना चाहिए, हमने उस तरह से उन्हें मेनटेन नहीं किया है। कुतुब मीनार में जो इन्तजाम है, यह नहीं कि वह आज हुआ है, आज जो हालत वहां पर है, वही हालत दो साल, पांच साल, बीस साल पहले भी थी—मुद्दत से वहीं हालत चली आ रही है। यह दुख की बात है कि कुतुब मीनार जैसी जितनी भी पुरानी तारीखी जगहें हैं, उनका इन्तजाम, उनकी देखभाल, जिस प्रकार से हमको करनी चाहिए, उस प्रकार से हमने नहीं की है—न हमने की है, न किसी दूसरे ने, न तीसरे ने की है।

मैं विदेशों में बहुत नहीं गया हूं, लेकिन अभी कुछ महीनों में मुझे बाहर जाने का मौका मिला।

मैं सोवियत यूनियन में गया, जापान गया, अस्ट्रेलिया गया। मैंने सोवियत यूनियन में पुरानी ऐतिहासिक इमारतों को देखा, उनकी मैन्टिनेंस को देखा। ज़ार के जमाने की इमारतों का भी जिनके बारे में समझा यह जाता था कि शायद उनका मैंटिनेंस ठीक ढंग से न होता होगा, उनका मैंटिनेंस भी बहुत अच्छे ढंग से वहां हुआ है। हमारे यहां राजघाट हो, कुतुब मीनार हो, शान्तिवन हो, मौलाना आज़ाद का मकबरा हो या हिन्दुस्तान की दूसरी इमारतें हों, मेरी

[श्री एच० के० एल० भगत]

फीलिंग यह है कि हम में से किसी ने उसके साथ न्याय नहीं किया, न किसी ने उसकी तरफ ध्यान दिया । जब कोई बात हो जाती है, इतना बड़ा हादसा हो जाता है तब हम जागते हैं । आज हम इसकी चर्चा कर रहे हैं । हम सब लोग जिम्मेदार आदमी हैं, दिल्ली के लोग हैं खास तौर से चुने हुए, हम भी कुतुब मीनार पर जाते रहे हैं, देखते रहे हैं, हमें भी इन्तजाम बरसों पहले से मालूम रहा है कि क्या इन्तजाम है, मुझे भी मालूम था, वाजपेयी जी को भी मालूम था, सब को मालूम था । यह हमारी जिम्मेदारी है । हम में से किसी आदमी ने इस इन्तजाम की तरफ ध्यान नहीं दिया, न सोचा, न सरकार ने सोचा, न किसी और ने सोचा, न हमारी सरकार ने सोचा, न इनकी सरकार ने सोचा । बिजली का इन्तजाम शुरू से लेकर आखिर तक इतना निकम्मा रहा, कितने दुख की बात है कि कुतुब मीनार जैसी जगह पर, आज मैंने अखबारों में पढ़ा कि वहां तारें ऐसी लटकी हुई हैं कि अन्दर से भी बिजली बुझ सकती है, कोई झटका लगे तो स्विच गिर सकता है, बहुत ही गलत मैंटिनेंस कुतुब मीनार के अन्दर का है । बाहर भी इन्तजाम अच्छा होना चाहिए । मुद्दत से, तीस या बत्तीस साल से दो तीन अटेंडेंट हैं । बात यह है कि ज्यूडिशियल इंक्वायरी आर्डर हुई है वाजपेयी जी ने कहा कि गृह मंत्री को कुछ नहीं बोलना चाहिए था, एजूकेशन मिनिस्टर को कुछ नहीं बोलना चाहिए था, मैं भी समझता हूं कि कुछ नहीं बोलना चाहिए था और शायद ज्यूडिशियल इंक्वायरी के समय हमें भी नहीं बोलना चाहिए था, लेकिन वाक्या ऐसा है, मैं गृह मंत्री की कोई सफाई नहीं दे रहा हूं, उस वक्त गृह मंत्री वहां गए, जो उनको फस्ट इम्प्रेशन वहां जाते ही मिला वह उन्होंने हाउस में रख दिया । एजूकेशन मिनिस्टर को जो कुछ मिला वह उन्होंने रख दिया । ज्यूडिशियल इंक्वायरी जो आर्डर हुई है उसके होते हुए बहुत कुछ हम नहीं कह सकते हैं । मगर स्वाभाविक है कि ऐसी ट्रेजडी पर कुछ कहा जाय । कुछ वाजपेयी जी ने कहा है, कुछ अन्दाजे से कहा जा सकता है, कुछ बातें तो सुनी हैं वह सामने आई हैं । वाजपेयी जी मौके पर गए थे, हम लोग भी गए थे मौके पर । हम लोगों ने भी लोगों से बात की । मैं भी गया । मैं ने जाते ही चौकीदार से बात की । उस ने कहा कि बिजली फेल हो गई थी, लोगों ने धक्का मारा और अन्दर चढ़ गए । यह फर्स्ट इम्प्रेशन उस ने दिया । मैं नहीं कहता कि कितना सच है, कितना झूठ है, अन्दर क्या हुआ क्या नहीं हुआ ? हम में से कोई वहां नहीं था । लेकिन बेसिक बात मैं कहना चाहता हूं कि हमारी इन चीजों का मैंटिनेंस बिल्कुल ठीक नहीं है ।

एक दिन मैं मौलाना आजाद के मकबरे पर गया । वहां हम ने अन्दर दाखिल होना चाहा । दस मिनट लगे उस आदमी को तलाश करने में जो शायद आधी तनख्वाह पर वहां ड्यूटी पर लगा हुआ था । मैं यह कह रहा हूं और जिम्मेदारी से कह रहा हूं, लेनिन के मकबरे को मैं ने देखा । कितना जबर्दस्त इन्तजाम वहां किया हुआ है और शान्तिवन हमारा किस तरह से मेन्टेन्ड है ? हमारे देश के लिए गांधी जी उसी तरह से हैं जिस तरह लेनिन सोवियत यूनियन के लिए हैं । इसी प्रकार से मैंने और दूसरी जगहों को देखा । मैं बेसिक बात कह रहा हूं, बिजली का इंतजाम और दूसरे जितने इन्तजाम हैं वह ठीक नहीं हैं । उस की ज्यूडिशियल इंक्वायरी होनी चाहिए और जो उस में कसूरवार हों उन को सजा देनी चाहिए लेकिन इन्तजाम सही

करने चाहिएं, इंतजाम ऐसे होने चाहिएं कि आइन्दा ऐसी बात नहीं हो।

शुरू में एक बात उड़ गई कि कुतुब मीनार फट गई, एक अफवाह यह उड़ी। उस समय जब ऐसे वाक्ये होते हैं तो दस तरह की बातें उसी समय उठती हैं। इसलिए मैं यह कहूँगा कि इस वाक्ये को किसी तरह का पोलिटिकल रूप देना, कोई रंग देना ठीक नहीं है। किसी तरह जिम्मेदारी से कोई नहीं बचना चाहता न जिम्मेदारी को कोई छिपाना चाहता है। न जिम्मेदारी से कोई बच सकता है न जिम्मेदारी से कोई बचेगा। लेकिन कोई राजनैतिक ऐंगल इस को दे कर इस से किसी दल के लिए नाजायज फायदा उठाने की कोशिश भी गलत होगी। सारे सदन को, सारे देश को इस घटना पर सोचना चाहिए, इंक्वायरी होनी चाहिए। इस के साथ ही हमारी ये जितनी चीजें हैं इन को मेन्टेन करने का अच्छा इन्तजाम होना चाहिए। मुझे बहुत अफसोस होता है कई दफा हमारी पुरानी ऐतिहासिक चीजों के लिए कोई खर्च की बात होती है तो लोग निन्दा करने लग जाते हैं, चर्चा करने लग जाते हैं। मुझे कहना पड़ता है इस समय कि जवाहर लाल नेहरू के शांतिवन पर जो हमारे नेशनल लीडर थे, लोगों ने जाना बन्द कर दिया, सरकारी फंक्शन बन्द कर दिए, मिनिस्टरों ने जाना बन्द कर दिया, राष्ट्रपति गए, उन की अगवानी के लिए मिनिस्टर नहीं पहुँचे। यह हालत थी। यह हमारे लिए और सबके लिये शर्मनाक बात है। इस ट्रैजीडी से हमें समझना चाहिए, सीखना चाहिए और हमारी जो पुरानी चीजें हैं उन को मेन्टेन करना चाहिए।

एक बात और कह कर खत्म करूंगा, हम ने जो मदद की वह और ज्यादा करनी चाहिए। मेरी राय में जो मदद की गई वह नाकाफी है, और ज्यादा मदद करनी चाहिए। इन शब्दों के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूँ।

श्री सज्जन कुमार (बाह्य दिल्ली) : सभापति जी, 4 दिसम्बर को कुतुब मीनार पर जो एक्सीडेन्ट हुआ, जो घटना घटी उसके लिए दिल्ली के ही नहीं बल्कि सारे देश के लोगों में दुःख है। चूंकि दिल्ली में यह घटना घटी इसलिए दिल्ली के लोगों को खास तौर से ज्यादा महसूस हो रही है। सारे सदन ने इस घटना पर शोक प्रकट किया है। हमारी माननीय प्रधान मन्त्री जी घटना स्थल पर गई थीं और अपना दुःख वहां पर व्यक्त किया था। मैं भी इस घटना पर अपना दुःख व्यक्त करना चाहता हूं और इस बात को कहना चाहता हूँ कि आगे कुछ ऐसे इन्तजामात करने चाहिएं जिनसे कि भविष्य में इस प्रकार की घटना दोबारा न घट सके।

यहां पर वाजपेयी जी ने कुछ बातें कही हैं। मैं एक बात बड़े अदब के साथ यहां पर कहना चाहता हूं कि एक ओर तो यह बात यहां पर कही जा रही है कि हम को इस घटना को पार्टी का सवाल नहीं बनाना चाहिए और इसको कोई पोलिटिकल रंग नहीं देना चाहिए। मैं यह कहना चाहता हूँ कि जस दिन कुतुब मीनार में यह घटना घटी थी वहां पर सबसे पहले मैं पहुँचा था। वहां पहुँचने के बाद मैं हास्पिटल भी पहुँचा और हमारे साथ-साथ वहां पर सैकड़ों समाजसेवी थे जिन्होंने उन लाशों को लाने-ले जाने का प्रबन्ध किया था। जो भी सेवा का काम उस वक्त हो सकता था वह काम उन्होंने वहाँ पर किया था। मैं वाजपेयी जी से पूछना चाहता हूँ कि यदि आपको इस घटना से इतना अधिक दुःख पहुंचा था तो क्या आप हास्पिटल गए और उनके उपचार

[श्री सज्जन कुमार]

के लिए जो भी मदद आप समाज-सेवा के रूप में कर सकते थे—क्या यह मदद आपने की ? वास्तव में आप इस घटना से पोलिटिकल फायदा उठाना चाहते हैं। अखबारों में अपने बयान छपवाने के लिए आप सरकार पर दोषारोपण कर सकते हैं। आप सरकार की आलोचना कर सकते हैं। लेकिन बाजपेयी जी, अगर आप को इस घटना का इतना ही दुःख था तो आपको इस सदन में यह कहना चाहिए था कि मृतकों के परिवारों को जो आर्थिक मदद दी गई है, केन्द्रीय सरकार की तरफ से, प्रधान मन्त्री जी की तरफ से और प्रान्तीय सरकारों की तरफ से मदद की गई है वह नाकाफी है, उसमें और अधिक मदद की जानी चाहिए उनके परिवारों को .....

(व्यवधान)

श्री एन० के० शेजवलकर (ग्वालियर) : शायद आपने—वाजपेयी जी को ठीक से सुना नहीं है या समझा नहीं है।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : उनकी समझ में नहीं आयेगा।

श्री सज्जन कुमार : आपने यह कहा है कि 5 हजार रुपया देकर उनके आंसू नहीं पोंछे जा सकते हैं लेकिन आपने यह नहीं कहा कि यह बिलखती हुई मातायें और विधवायें जो हैं उनकी ओर सरकार को खास ध्यान देना चाहिए और विशेष रूप से उनकी मदद करनी चाहिए, उनके रोजगार की व्यवस्था करनी चाहिए।

सभापति जी, एक बात यहां पर पुलिस के बारे में कही गई है। मैं जब वहां पर पहुंचा तो वहां पर काफी भीड़ थी, चौकीदार भी वहां पर था। मैंने उससे पूछा और जो दूसरे लोग वहां पर खड़े थे उनसे पूछा कि घटना कैसे घटी। वहां पर जो टूरिस्ट बसेज बैठे हुए हैं और जो टूरिस्ट बसेज के ड्राइवर्स और कन्डक्टर्स हैं उनकी प्रशंसा यहां पर नहीं की गई है। वे सब मदद के काम में जुट गए थे। पुलिस का सब-इंसपेक्टर और सिपाही भी वहां पर पहुंचा था। मैं यहां पर कोई पुलिस की सफाई नहीं देना चाहता हूं, उनके सम्बन्ध में गृह मन्त्री जी यहां पर अपना बयान देंगे लेकिन जो कुछ भीड़ ने वहां पर कहा, जो मौके पर लोग थे उन्होंने जो कुछ कहा वह मैं बताना चाहूंगा। वह सब-इंसपेक्टर और सिपाही जो वहां पर थे उनकी वर्दियां पसीने से तर-बतर थीं और ऐसा महसूस होता था कि उन्होंने बहुत मुस्तैदी के साथ काम किया। वहां पर जो भीड़ थी वह कह रही थी कि सब-इंस्पेक्टर और सिपाही सवा बारह बजे के करीब वहां पर पहुंचे और जो भी उन्होंने वहां पर काम किया उसकी सभी लोग प्रशंसा कर रहे थे। वहां पर जो टूरिस्ट बसें थीं उनसे पुलिस ने सहायता की मांग की और उन्होंने सहायता देने की बात मानी। जिन लोगों को उस एक्सीडेन्ट में चोटें आई थीं उनको वे लोग वैन्स में रखकर हास्पिटल पहुंचे। पुलिस की गाड़ी मोर्चे पर पहुंची और पुलिस की गाड़ी के अन्दर भी कुछ लोगों को हास्पिटल भेजा गया।

माननीय सभापति जी, मैं यह कहना चाहता हूँ कि जुडिशियल इन्क्वायरी के लिए कहा गया है, हम इस बात में नहीं जाना चाहते हैं कि कैसे वह घटना घटी, किसका उसमें दोष है, जुडिशियल इन्क्वायरी के अन्दर सब कुछ आ जाएगा, जब जुडिशियल इन्क्वायरी होगी। मैं दो बातें कहना चाहता हूं, एक तो यह कि यह मन्त्री जी यदि जुडिशियल इन्क्वायरी के अन्दर कोई भी व्यक्ति दोषी पाया जाए, तो उसके खिलाफ सख्त-से-सख्त कार्यवाही की जाए, जिससे

भविष्य में ऐसी कोई घटना न घट सके। इसके साथ-साथ मैं यह भी कहना चाहता हूं कि जितनी भी हमारी ऐतिहासिक इमारतें हैं, जिन इमारतों के रख-रखाव का काम हमारा विभाग करता है, ऐसी ऐतिहासिक इमारतों के रख-रखाव के अन्दर हमें जो कुछ भी इन्तजामात करने पड़ें, वे करने चाहिएं। कुतुब-मीनार को यदि आप भविष्य में खोलना चाहते हैं तो उसके लिये पूरी व्यवस्था करें, जिससे कि भविष्य में ऐसी कोई घटना न घट सके। दूसरी बात, जैसा कि मैंने कहा, इसको पोलिटिकल रंग न देकर सारे सदन को इस पर गम्भीरता से सोचना चाहिए कि आगे भविष्य में ऐसी कोई घटना न घटे। पहले भी यह ऐतिहासिक इमारत यहां पर खड़ी थी और इसके इन्तजामात थे। मेरा ख्याल है कि लाखों लोगों ने इस ऐतिहासिक इमारत को देखा है, लेकिन ऐसी घटना के बारे में हम भी नहीं सोच सकते थे, सरकार भी नहीं सोच सकती थी, देश भी नहीं सोच सकता था, लेकिन जो घटना हुई है, ऐसी घटना भविष्य में न घटे, इसका इन्तजाम करना चाहिए।

एक बात कहकर, सभापति जी, मैं अपनी बात समाप्त करूंगा। माननीय वाजपेयी जी ने कहा है कि दिल्ली में ला एंड आर्डर की हालत खराब होती जा रही है। मैं कहना चाहता हूं कि आप दो वर्षों के आंकड़े उठाकर देखें, ये आंकड़े अखबारों और गृह मंत्री जी के आंकड़े नहीं हैं, दिल्ली के नागरिकों के आंकड़े हैं, यदि उनको देखा जाये तो 1980 के पहले जो ला एंड आर्डर की हालत थी, हमारे दिल्ली के अन्दर, उसमें सुधार हुआ है। उक्तैतियां कम हुई हैं, लड़कियों को छेड़ना कम हुआ है, मैं कह सकता हूं कि विरोधी दल के लोगों को यह बात अच्छी नहीं लगती, लेकिन जब श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी कह रहे थे, तो हमें भी अच्छी नहीं लग रही थी और हम छींटा-कसी नहीं कर रहे थे। मैं कहना चाहता हूं कि आप गम्भीरता से सोचिये। भारतीय जनता पार्टी के लोग सैन्टर हाल में इस बात को महसूस करते हैं कि दिल्ली में ला एंड आर्डर की हालत सुधरी है। लेकिन जब मैं उनसे कहता हूँ कि आप यह बात अखबारों से कहें, पब्लिक में कहें, तो कहते हैं कि यदि यह बात हम पब्लिक में कहेंगे, तो हमें वोट कहां से मिलेंगे (व्यवधान) सभापति जी, सवाल वोटों का है, सवाल चुनाव में वोट प्राप्त करने के लिए है, यह इसे कुछ पोलिटीकल तरीके से अपनाना चाहते हैं, जिससे दिल्ली में लोगों में झगड़ा बन सके और मैं समझता हूं कि यह नहीं हो सकता है।

मैं फिर सरकार से कहना चाहता हूँ कि उनको अधिक से अधिक आर्थिक सहायता दी जानी चाहिए और उनके बच्चों के लिए, उनके परिवार के लोगों के लिए नौकरी की व्यवस्था की जानी चाहिए।

श्री मनीराम बागड़ी (हिसार) : सभापति महोदय, बहुत अफसोस की बात है कि यहां कुछ साथी हंस रहे हैं, वे जरा कृपा करके हंसें नहीं क्योंकि यह बहुत दर्द की बात है, अगर कलेजे की नहीं तो कम से कम दिखाने की जरूर है। अगर किसी मैम्बर का, मंत्री का या प्रधान मंत्री का या राष्ट्रपति का इतनी बड़ी दुर्घटना के साथ संबंध होता तो शायद यह हंसी की आवाज न निकलती। ये बच्चे यतीम बच्चों, लावारिस बच्चों जिन का कि कोई वारिस नहीं है, की तरह से मरे हैं।

मैं शासन के विरोध में नहीं जाना चाहता, क्योंकि विरोधपक्ष शक्तिशाली नहीं है। अगर विरोध पक्ष में कोई शक्ति है

[श्री मनी राम बागड़ी]

तो उसको अपनी जिम्मेदारी को ओढना चाहिये, इस तरह से बच्चे मर जाएं तो शासन को उखाड़ फेंकने की उन में शक्ति होनी चाहिये। मैं शासन के लोगों से भी कहूंगा—इस तरह से बच्चे यतीमों की तरह से मर जायं और शासन अपने ऊपर जिम्मेदारी न ले, मां हो कर भी प्रधान मन्त्री इस्तीफा न दे और ज्ञानी जी, जो अपने नाम के आगे ज्ञानी शब्द लगाते हैं, उन को यह पता न हो कि देश के अन्दर बच्चों की हत्याऐं होती हैं, चाहे कूटनीति से हों या किसी भी तरह से हों, तो उस शासन के लिए उतराव और बदलाव लाजमी हो जाता है।

मैं चार बातें कहूंगा—जब कहीं कोई घटना घट जाती है, लोगों को मार दिया जाता है और पूछा जाय कि ऐसा क्यों हुआ, क्या अमन-चैन व्यवस्था खराब थी, तो कहते हैं डाकुओं ने डाका डाल दिया था, कातिल ने कत्ल कर दिया। मैं कहता हूँ—ज्ञानी जी, नही मारेंगे, घर-मन्त्री नहीं मारेंगे, प्रधान मन्त्री नहीं मारेंगी, शिक्षा मन्त्री नहीं मारेंगे, विरोध के लोग नहीं मारेंगे, लेकिन सवाल है कि मरे क्यों ? वक्त की हुकूमत जिम्मेदार क्यों नहीं थी ? हरियाणा के बेशतर बच्चे मरे हैं, 10 साल की उम्र के बच्चे मरे हैं। काश, यह होता कि उन बच्चों में, उन 45 बच्चों में, लोक सभा के सदस्यों के बच्चे शामिल होते, जिन में मैं भी शामिल हूँ, उन के बच्चे मरते और फिर यह पार्लियामेन्ट चलती, यह शासन चलता, तब मैं देखता कि कैसे चलती है। प्रधान मंत्री का लड़का, घर-मंत्री का लड़का या मंत्रियों के पांच भी लड़के मरते, तब पता लगता कि देश के बच्चे मरे, लेकिन यहां तो यतीमखाने के बच्चे मरे हैं।

सदर साहब, यह वाक्या साढ़े-ग्यारह बजे का है और 2 बजे आकाश-वाणी से इत्तिला हो गई थी, लेकिन आप के लोग कितने गिर चुके हैं कि लंच उड़ा रहे थे, उन को पता ही नहीं था कि दिल्ली के अन्दर इस तरह से बच्चें मर गये हैं। यह साढ़े ग्यारह बजे का वाक्या था, कमिश्नर कब पहुँचा ? वह कौन है जिस का आप जुलूस निकाला करते हैं, देश की कामयाब नारी है—किरण-देवी ? कोई पुलिस अधिकारी वहां नही पहुँचा। कहते हैं बिजली फेल हो गई थी, लेकिन यहां गनीखां चौधरी व्यान दे रहे थे कि बिजली बड़ी कामयाब है, उधर बच्चों की लाशें उठाई जा रही थीं। सदर साहब, यह किस की जिम्मेदारी है ? इस के लिये यह शासन दोषी है, पापी है, जिस के राज्य में इस तरीके से, यतीमों की तरह से बच्चों की हत्यायें होती हैं। उन बच्चों की मौत की जिम्मेदारी हमारी है, हम उन के वारिस हैं, अगर हम उस जिम्मेदारी से भागते हैं—हिन्दुस्तान की जनता कमजोर हो सकती है, कोई तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता, लेकिन ज्ञानी जी, भगवान के हाथ बहुत लम्बे हैं। आप ईश्वरवादी हैं। भगवान देख रहा है। गरीब की हाय से लोहा भी भस्म हो जाता है, इन बच्चों की चीखों-पुकार खाली जाने वाली नही हैं। क्या मजाक बना रखा है ? वहां लोगों का औरतों और लड़कियों के साथ क्या हुआ ? गुण्डों ने किया। मैंने कब कहा है कि शरीफों ने किया, लेकिन उस की जिम्मेदारी किस की है ? अगर गुण्डे भी कोई गलत काम करते हैं तो उस की जिम्मेदारी भी हम पर आती है। गांधी जी राम राज्य की बात कहा करते थे—उस जमाने में अगर बाप के बैठे बेटे की

मौत होती थी तो वह दरबार में चला जाता था और कहता था कि राम, तू पापी है, बाप की जिन्दगी में बेटा चला गया। जिस राज में इस तरह से 45 बच्चे मर जायं, वह राज पापी है, उस का राजा पापी है, तुम को उस पाप का प्रायश्चित करना पड़ेगा। इस तरह से बच्चे मरते जायं, उस के लिये तदबीरें सोचते जाना, अच्छी बात नहीं है। एक आदमी हो, दो आदमी हो, 5 आदमी हो, 10 आदमी हो, इस से कुछ बनने वाला नहीं है।

इस में न्यायिक जांच का मतलब क्या रह गया है। किस के खिलाफ न्यायिक जांच कर रहे हैं। जिसके खिलाफ न्यायिक जांच कर रहे हो, यह स्पष्ट है, साफ है कि वह न्यायिक जांच शासन के खिलाफ है और अगर यह राजनीतिक है, तो होनी चाहिए।

जिस राज्य के अन्दर ऐसा हुआ है, उस के खिलाफ जांच होनी चाहिए। रेलों की दुर्घटना कोई केदार पाण्डे नहीं करते हैं लेकिन उनसे कहते हैं कि इस्तीफा दो। गोलियों से मारा जाए, तो कोई होम मिनिस्टर गोली नहीं चलाता और बीमारी में जो मरते हैं, तो कोई स्वास्थ्य मंत्री को जाकर नहीं मारता। मैं चाहूंगा कि इस की आप जितना निन्दा कर सकें, उतनी तो आप करिये ही लेकिन मैं ज्ञानी जी से एक बात कहता हूं। मैं द्वेष से बात नहीं करता पर कुछ द्वेष भी है और इस वक्त एक जलन सी भी है लेकिन मैं यह कहता हूं कि अगर मैं घर मन्त्री बना होता, वैसे न मेरी औकात है और न 7 पीढ़ी बन सकता हूँ तो अपने उसूलों की सौगन्ध खाकर कहता हूं कि अगर मैं तुम्हारी जगह घर मन्त्री होता, तो इस्तीफा दे देता और ऐसी पाप की गद्दी पर न बैठता। आप तो गुरुओं की वाणी को सुनने वाले हो, जो इस देश में सिर्फ बच्चों के लिए, सिर्फ बच्चों की शहादत पर देश में क्रान्ति लाए।

मेरे कहने से कोई फर्क पड़े या न पड़े, अगर आप की आत्मा जलती है, तो मुझे तकलीफ है, नहीं जलनी चाहिए और जले तो बेशक जले, उसमें मुझे आपत्ति नहीं है।

आप लोग कहते हैं कि वोट के लिए यह है। ऐसे कहां वोट मिला करते हैं, कहां ऐसे वोट मिलने लग गई। हमें न वोट की जरूरत है और न यह वोट का दरबार है और न वोट ऐसे मिलेंगी। विरोधी पक्ष भी वोट पाने का हकदार नहीं है, वह विरोधी जो 50 आदमी भी एजोर्नमैंट मोशन के लिए जुटा सकता यह शासन बिल्कुल हत्यारा शासन है और विरोधी पक्ष बुजदिल और कायर है, जो हत्यारे शासन के खिलाफ कोई कदम नहीं उठा सकता और सिर ऊंचा करके नही लड़ सकता।

इन शब्दों के साथ मैं अपनी जगह लेता हूं।

SHRI JAGDISH TYTLER (Delhi Sadar) : Mr. Chairman, Sir, in the last half an hour, we have heard mostly the speeches practically trying to undo each other, rather than concentrating on the tragedy which has fallen on Delhi and practically on the whole of this country.

The anguish and agony of this tragedy has no parallel. Many reasons have been given by the opposition sitting here ; many reasons have also been given by the press and many reasons we are also going to give. But I do not think this will wash away the sins of those people who are responsible to see that the

[Sh. Jagdish Tytler]

children or the tourists going to Qutab Minar are looked after well.

Many rumours were started ; some about electricity failure; some about crackers. I do not know how the Hon. Member, Mr. Atal Bihari Vajpayee spoke about Mr. Mandal and others going Yesterday to Qutab Minar. We also went and we know that Qutab Minar is sealed. How they entered I do not know, from the top or through some window. It is again **his should be exposed. The Hon. Member has got a good way of speaking and he can impress many people. But when he impresses people with ** it should be exposed ..... (*Interruptions*) I must be allowed to speak. He should not tell ** to the House. (*Interruptions*)

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE: They were allowed; I am prepared to prove this.

SHRI JAGDISH TYTLER : Nobody is allowed to enter Qutab Minar.

MR. CHAIRMAN : Will you please take your seat? I think, the Hon. Member will keep this in mind that the word ** is unparliamentary. Therefore, this will be deleted from the record.

SHRI JAGDISH TYTLER : That is a word I am prepared to withdraw. I would say, the things which he said were untrue, the things which he said were not right. I do not want to get into this thing. There are quite a number of things which he mentioned. I want to say about one or two things that he mentioned. This was a thing which was outright nowhere near the truth. That is why I thought to expose to the people in the opposition who are supporting him, the people who are feeling very happy that he has made a good point that certain things are spoken in this House which are not anywhere near the truth.

I went there when we got the news. I had been there for six hours and I am telling you that we were there. We had gone there with the purpose of helping. These are certain points which arose when this tragedy has taken place.

The first point is that the door of the Qutab Minar opens inward. I want that the Court of Enquiry should keep a note of this point. The door of the Qutab Minar opens inward. Why was it closed with so many people inside? If the door opened outwards, the stempede would have broken the doors open. Who was responsible for closing this door? Why was it closed? Why was it not kept open? Where was the door attendant at the time the lights went out? Why did he not open the door immediately? Was the door closed with mischievous intentions ? This is my first point.

The second point is that the children were accompanied by six teachers. The important question is what was the responsibility of the teachers. There must have been teachers accompanying the children. They were six of them. Where were the teachers ? What were they doing at the time of the stampede and the rush for the doors? Were they with the children or were they outside? What were they doing? This should be ascertained also. Six responsible teachers going with the children and not one teacher has died in the stampede. Only 45 children, most of them are dead. There were six teachers who accompanied....(*Interruptions*)

The third most important point that Mr. Vajpayee has made is—it is a valid point which he made when he was speaking—that there were other reports which have to be carefully sifted for truth. Where were the foreign girls who were allegedly molested? What happened to them? Where were they at the time

**Expunged as ordered by the Chair.

of the tragedy and where are they now? Have they been called for enquiry? If their clothes were snatched and their materials removed from them, what are these materials and have they been found at the Qutab ?

Mr. Vajpayee has very specifically mentioned that he has seen the scattered skirt of the foreign girl. He has seen the under-garments of those ladies. I do not know how he was able to identify that they belong to these girls and nobodyelse. There were other ladies. There was a girl from Singapore who had died. This is what I would say. Once you want to make a point, dramatically you can speak something referring to it. It should not be. It is a big tragedy. I think we should take a serious note of this tragedy.....(*Interruptions*)

I do not know. Go to the records you will find.

All these questions have to be asked and answers have to be received for each of these. But this is not enough. This tragedy could have been avoided. But once the tragedy has occurred, it only makes it important and essential to see that there is no repetition in future. Yet there are still some things which are left out. The question is what can we do for these people who are passing through a very difficult period, who have lost their children. I think the greatest loss for any human-being is his own child. Now the whole village is filled with sorrow that 27 children have been lost from that village. What have the Government done and what they propose to do for those parents who have lost their valuable lives ? At that particular time, I was there. I spent some six hours with some Congressmen. The parents only say this that there should not be post-mortem. I just could not say anything. But at that moment, when such a big tragedy occurs, all these things are obvious. The parents only want that this kind of post-mortem should be avoided and the children should be handed over to them quickly so that they can take them home and burn or bury them, according to their rites.

I think that this whole tragedy is also a lesson to the people of Delhi. It is a lesson to the Authorities to make them more aware how to run Delhi and also to the people concerned who run these old monuments of our country, particularly in Delhi. To us, who are in position of authority, it should make us humble. It should also teach us that the values of human life exceed the value of any other thing in the world.

SHRI SOMNATH CHATTERJEE (Jadavpur) : Mr. Chairman, Sir, we are having this discussion under the shadow of a great tragedy, the tragedy which has not been caused by any act of nature but obviously by some act of mismanagement or criminal negligence on the part of somebody. And who, is to account for it ? We are reminded that we should not politicalise this issue. Speaking for myself and for my Party, I can assure this House that it is farthest from my mind. But somebody has to be held responsible, somebody has to account for it. And the very fact that the Ministers are here today to reply to the discussion shows that they are taking the responsibility, at least the administrative responsibility of it. Therefore, when we say that the administration has failed, that does not mean that we are politicalising this issue ; that should be appreciated.

Qutab Minar is one of the proud possessions of this country. A structural marvel, a Twelfth Century monument of victory, had become a death-trap, if not a monumental scandal, on last Friday. What happened on that day ? It was a day when access to that was free.

[Sh. Somnath Chatterjee]

It is known that, during the winter, specially after examinations are over, there is always a very large congregation, a very large number of people coming there. But do we have to suffer this type of tragedy to do our minimum duty to regulate the number of people there ? Do we have to suffer this type of agony and anguish to wake up to do our minimum duty ? That is the point that has to be answered.

The House will remember that we have conveyed our sincere condolences to the members of the bereaved family. We sincerely felt that such a tragedy had overtaken us in which 45 persons, mostly children, had been killed and 25 injured—I do not know the exact figure now; the Hon. Minister can give us. It appears that, when hardly 100 persons can be inside at a given point of time, at least 300 persons were inside and they were trapped. I do not want to do anything or say anything which will in any way inhibit a proper judicial inquiry. But since we are having a discussion, certain issues which are so tell-tale, so obvious, have to be looked into.

17.58 hrs.

[MR. DEPUTY-SPEAKER *in the Chair*]

There is the questian of black-out or load-shedding. It is very vital that this question should be decided by the Tribunal. But can be deny that there is an effort to give conflicting versions—coming from very high quarters, supposedly responsible quarters—which will obviously queer the pitch, if I may use that expression? The Hon. Home Minister in that very statement where he announced holding of a judicial inquiry gave a certificate to the firemen, to the policemen and to the ambulances saying that they immediately rushed to the site. But we have come to know from people who had been there and from the newspapers that they did not reach for at least one hour and there were only one Sub-Inspecter and one Constable who were there to assists in the rescue operations. We should express our sincere thanks to the voluntary agencies like the tourist guides, even casual visitors there, shop-keepers, people who had gone to the shops, the customers; they all rendered tremendous service to rescue those people. In Delhi, in a place like Qutab Minar which is visited by thousands and thousands of people, it is a matter of great shock for everybody that it takes the police, the firemen and the ambulance who are experts in rescue work, more than an hour to reach the spot. And the Home Minister of India giving a certificate to them that they rushed to the spot immediately ! Sir, these are matters for the judicial inquiry. I am not blaming him as such. But, after all, he is holding a very important post. A statement coming from the Home Minister of India is bound to have its repercussions. I did not know and I come to know to-day from Mr. Vajpayee's speech that the Hon. Education Minister has made a statement which gives rise to so many queries in our minds. Why this attempt to create an impression that there was a sudden indiscipline in the students, a number of indisciplined students, youngsters which caused this tragedy?

17 hrs.

There is a very serious charge that some women visitors, specially foreign women visitors, had been molested. They have made a statement. It has come out in the newspapers. I would like to know from the Hon. Minister. Would they take this Police Officer to task, however high he might be, who issues statements in the newspapers on an issue which is before a judicial tribunal? How dare they make such statements on the merits before the Tribunal when the Government of India has constituted this Tribunal ? What is the attempt going on ?

Therefore, what we feel is that this is an attempt of a sort of pre-empting the decision or pre-empting a proper and thorough investigation. This attempt should immediately be stopped. When you constituted a tribunal, you leave it to them to decide.

One thing is very clear. Whatever may be said whether there was a chowkidar who was making an attempt to stop these youngsters going in or not, considering the popularity of the place as a tourist resort and as a place where people go regularly—this is not a sudden influx of the people on that day which has come but I do not know of a tourist who has come to Delhi and who has not gone to Qutab Minar—even then, what is the minimum arrangement made to regulate the people there when it is known that it cannot accommodate more than 100 persons or even some papers say 150 or 180. How can it be ? Is it nobody's responsibility ? Is it nobody's business ? The people have to look after themselves ?

Then there are conflicting theories about load shedding and power failure. Was it power failure at 11.30 a.m. ? Was it power failure by some switching off by somebody ? There is also a theory which has been a sort of going round. This is very pertinent. In a place like that frequented by so many people, there is no emergency lighting system.

I do not wish to say anything which might in any way affect the judicial inquiry. In a matter like this I feel that some responsibility has to be taken not only by the Police administration but also by the political administration. How do you discharge your function ? How do you discharge your duty ? At least we found that type of awareness when you came to the House and mentioned about the tragedy. But somebody has to take the responsibility. How do we show our face in the world ? That aspect of Mr. Vajpayee's speech moved me. How do we show our face to the rest of the world—that in the capital city of India we cannot even protect our small children who have come on a holiday spirit to discover India ? This is the crux of the matter. They are all on a voyage of discovery. They have come from their schools. They have come to Delhi and they will go to other places of historical interest—to Agra, Jaipur, etc. and they are completely left in the mercy of either these anti-social elements who are after some women there inside that trap—it has become a trap—or at the mercy of hoodlums.

They are at the mercy of complete failure of administrative machinery. They are to look after for themselves. Sir, I appreciate the depth of emotion of Shri Tytler—especially when he is representing this part of the country—but what is the good of saying what happened to the teachers. That is no answer.

Therefore, this matter should be taken up seriously. Don't try to protect anybody however high-up he may be. I request to the Government with great sincerity that there should be no attempt-till the enquiry report is given-by any officer or even Minister to say things on the issue which will only divert people's attention from the real object.

Sir, in today's newspaper a news item has appeared that yesterday when the Judge had gone to inspect the spot not a single staff of the Archeological Survey of India was present. Does it show arrogance on their part or it is another type of negligence on their part ? Sir, I am not politicising the issue when I say that Home Ministry or the Education Ministry is not doing its function, The Education Minister will have to answer as to why

[Sh. Somnath Chatterjee]

there was lukewarm response from the Department under her charge otherwise how do you expect people to have faith in the enquiry.

Sir, I sincerely hope we shall not have such an event in future. Light has been extinguished from so many families. Let us not have such type of darkness in any home in future.

श्री नवल किशोर शर्मा (दौसा) : उपाध्यक्ष महोदय, आज जिस दुखान्त पर चर्चा हो रही है उससे निश्चय ही सारे सदन को और देश को गहरा आघात पहुँचा है। कुतुब मीनार इस देश का नहीं, अन्तर्राष्ट्रीय जगत के लिये भी एक पर्यटक का आकर्षण केन्द्र रहा है। पिछले 700, 750 वर्षों से लाखों लोग इस स्थान पर आते रहे हैं और इस दर्शनीय स्थान को देख कर आनन्दित होते रहे हैं। शुक्रवार का दिन इस देश के पर्यटन के इतिहास में एक काला दिन था जिस दिन 45 लागों की, जिसमें अधिकांश बच्चे थे उनकी दर्दनाक तरीके से मौत हो गई। कई घरों का चिराग बुझ गया, कई माताओं की कोख खाली हो गई। इस पर इस देश को और हम सब को गहरा शोक है। यह सही है कि यदि सावधानी बरती गई होती, अगर शुरू से कुतुब मीनार जैसे पर्यटक स्थान के रख-रखाव के बारे में व्यवस्थित ढंग से काम हुआ होता तो शायद यह घटना नहीं होती। पर दोष किसका है ? खाली होम मिनिस्टर को या शिक्षा मंत्री को दोष देने से काम नहीं चलेगा।

दिल्ली में अनेक दलों की मैट्रोपोलिटन कौंसिल और कार्पोरेशन बनती आई हैं और पिछले कुछ सालों में केन्द्र में भी एक दूसरे दल की सरकार थी। उस ज़माने में भी, जो व्यवस्था पहले से चालू थी, उसमें कहीं कोई सुधार नहीं किया गया। असल में सही बात तो यह है कि किसी ने कभी सोचा ही नहीं था कि ऐसा भी कुछ हो सकता है। अब जबकि घटना घट गई—यह दुर्भाग्य की बात है ; अगर यह न घटी होती, तो इस देश के लिए अच्छा होता—, तब हम अक्लमंद बनने की कोशिश कर रहे हैं। पर यह मौका है इस घटना से कुछ सबक लेने का।

मैं इस विवाद में नहीं जाना चाहता कि गृह मंत्री जी ने क्या बयान दिया या शिक्षा मंत्री का क्या बयान है। यह भी एक विवाद का विषय है कि दुर्घटना कैसे घटी। कुछ लोग अखबारों की जानकारी के आधार पर कहते हैं कि किसी ने कह दिया कि कुतुब गिर रहा है, इस पर भगदड़ शुरू हो गई। कुछ लोग कहते हैं कि कुछ लोगों ने किसी विदेशी महिला के साथ अभद्र व्यवहार करने की कोशिश की और उससे भगदड़ मच गई। कुछ लोग कहते हैं कि बिजली गुल कर दी गई, जबकि कुछ लोग कहते हैं कि बिजली का फ़ैल्युर था। इस तरह की अनेक बातें समाचार पत्रों और लोगों के बयानों से सामने आ रही हैं। कुछ लोग कहते हैं कि पुलिस बहुत देर से पहुँची। कुछ लोग कहते हैं कि पुलिस समय से पहुंच गई।

यदि इन सारे विषयों पर आज हम इस सदन में चर्चा करें, या किसी को दोषी या निर्दोष प्रमाणित करने की कोशिश करें, तो बेकार है। इन सब बातों की जांच तो कमीशन करेगा और सरकार ने इस काम के लिए एनक्वायरी कमीशन नियुक्त कर के ठीक ही किया है। एनक्वायरी कमीशन को इन सारे मुद्दों में जाना होगा और फैसला करना होगा कि क्यों यह गड़बड़ हुई, बिजली कब चली गई थी, या बिजली बुझा दी गई थी, अगर एमर्जेन्सी लाइट्स नहीं थी, तो क्यों नहीं थी, क्या इस बारे में कोई

आर्डर्ज थे, अगर नहीं थे, तो क्यों नहीं थे। उसका पुलिस के देर से पहुंचने या जल्दी पहुंचने के सवाल पर भी निर्णय करना होगा। एम्बुलेंस गाडी देर से पहुंची एक सब-इंस्पैक्टर पहुंचा दो सब-इंस्पैक्टर पहुंचे, महरौली के थानेदार साहब, इंचार्ज साहब, कहां थे, इन सब सवालात पर एनक्वायरी कमीशन को निर्णय लेना होगा।

मैं श्री चटर्जी से सहमत हूं कि इनक्वायरी कमीशन के फाइंडिंग्ज के अनुसार जो कोई व्यक्ति दोषी हो, चाहे वह कितना ही बड़ा हो, सरकार को उसको बचाने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। हम तो आज गृह मन्त्री से एक ही एशोरेंस चाहते हैं कि दोषी व्यक्ति कोई भी हो, कितना भी बड़ा हो, उसके साथ कानूनी सुलूक के अलावा, सख्त कानूनी कार्यवाही के अलावा कोई नर्मी का सुलूक नहीं किया जाएगा। यह आश्वासन हम उनसे चाहते हैं। एनक्वायरी कमीशन की रिपोर्ट पर अमल किया जाए। दुर्भाग्य की बात है कि बहुत से इनक्वायरी कमीशन बनते हैं और अनुभव के आधार पर हम कह सकते हैं कि उनकी रिपोर्टें खत्ते में धूल चाटती रहती हैं।

श्री एम० राम गोपाल रेड्डी (निजामाबाद) : नहीं। इस गवर्नमेंट में ऐसा नहीं होगा।

श्री नवल किशोर शर्मा : श्री रेड्डी के आश्वासन से मैं आश्वस्त नहीं हूंगा। सदन और देश उनके आश्वासन से आश्वस्त नहीं होगा। इसके लिए आश्वस्त करना पड़ेगा गृह मन्त्री को।

पूर्ति और पुनर्वास मन्त्रालय में राज्य मन्त्री (श्री भगवत झा आजाद) : वह आश्वासन नहीं दे रहे हैं, वह अपनी बात कह रहे हैं।

श्री नवल किशोर शर्मा : वह अच्छी बात कर रहे हैं, मेरी बात की ताईद कर रहे हैं।

इस दुखांत घटना में हम राजनीति न लायें, तो ज्यादा अच्छा है। चुनाव नहीं हुए, कानून और व्यवस्था ठीक नहीं है इसके लिए तो और भी मौके हैं। अनेक मौके आते हैं। गम्भीर लोगों को गम्भीर मौकों पर गम्भीर और जिम्मेदारी के साथ बातें करनी चाहिएं, यह मेरी मान्यता है। मैं तो इस मौके पर इतना ही कहूंगा, जो कुछ हुआ वह एक दुख की घटना है। यह सदन, यह देश उन लोगों के लिए जिनके घर में क्षति हुई है, अकाल मृत्यु हुई है, उनके प्रति सहानुभूति रखता है।

एक बात और कहना चाहूँगा। यह तो सही है, वाजपेयी जी ने ठीक कहा, जीवन का मूल्य पांच हजार और दस हजार रुपयों से नहीं आंका जा सकता लेकिन जो सहायता एनाउन्स की गई है वह बहुत नाकाफी है। सरकार को अपनी जिम्मेदारी को और थोड़ा बैनिवोलेंट होकर निभाने की कोशिश करनी चाहिए। कुछ लोग ऐसे भी हो सकते हैं जिनके घर में शायद एक ही बच्चा हो, कमाने वाला भी कोई न हो, ऐसे लोगों को पांच हजार रुपये की सहायता नितांत थोड़ी है। मैं गृह मन्त्री जी से और सरकार से चाहूंगा कि इंडिविजुअल केसेस को देखकर खुले दिल से इसमें सहायता करनी चाहिए और साथ ही में एनक्वायरी कमीशन के लिए भी कहूंगा कि जो समय दिया गया है रिपोर्ट को पूरा करते का उसके अन्दर रिपोर्ट पूरी करके देनी चाहिए। अक्सर एनक्वायरी कमीशन का समय बढ़ता जाता है और तब तक उसका मतलब खत्म हो जाता है। यह

[श्री नवल किशोर शर्मा]

मेरा दूसरा निवेदन है। इन्हीं शब्दों के साथ मैं इस मौके पर गहरी संवेदना प्रकट करता हूं।

MR. DEPUTY-SPEAKER : This discussion is going on with tears in our eyes. Therefore, I would say that let us not bring any extreneous things in the discussion and spoil the mood of the House. Is the representatives of the people of this country, we have to give solace to the parents of the children who died in Qutab tragedy. A judicial enquiry has already been ordered.

PROF. MADHU DANDAVATE : Nobody has violated either from that side or from this side.

श्री रशीद मसूद (सहारनपुर) : उपाध्यक्ष महोदय, जो वाकया जुमा को हुआ है उसके अफसोस के इजहार के लिए अल्फाज मुमकिन नहीं हैं। जिस तरीके से सारी संस्थाओं ने, सारी पार्टियों ने और हिन्दुस्तान के सब लोगों ने इसका शोक मनाया है मैं समझता हूँ वह हमारी तहजीब के मुताबिक है। लेकिन इस सदन में, इस ऐवान में जब चर्चा के लिए यह मसला आया है तो उसमें फिर यह बात कहना कि सियासी रंग दिया जा रहा है या सियासी बात कही जा रही है, या पार्टी की बात कही जा रही है बिल्कुल मुनासिब नहीं है। यहां पर किसी का भी मकसद किसी पार्टी को, किसी सरकार को या किसी दूसरे को इस वजह से जिम्मेदार ठहराना नहीं है कि वह किसी खास पार्टी से ताल्लुक रखता है बल्कि इसलिए कि हम डेमोक्रेटिक कन्ट्री में रहते हैं। मैं नहीं जानता उस तरफ के लोग इस पर यकीन रखते हैं या नहीं लेकिन मैं यकीन रखता हूं। मैं इस हाउस को याद दिलाना चाहता हूं कि जब बेलची का वाक्या हुआ था (तब हम उस तरफ बैठे हुए थे) तब की डिबेट्स को आप उठाकर देख लीजिए, हमने अपनी सरकार की आलोचना करने में कोई कसर उठा नहीं रखी थी। लिहाजा अगर इधर बैठे हुए लोग सरकार की फेल्योर के लिए उसकी आलोचना करें और यह कहें कि जिन लोगों की जानें बचाई जा सकती थीं उनको बचाने में यह सरकार नाकाम रही तो इसमें कौन सा सियासी रंग देकर फायदा उठाना चाहते हैं—यह बात मेरी समझ में नहीं आई।

मेरे दोस्त ने जो बात बताई, बहुत अच्छा किया उन्होंने मदद की, बहुत से लोग वहां पर पहुँचे लेकिन यह कह देना कि हमने क्या किया—यह उनके लिए मुनासिब नहीं था। जिस तरीके से आप वहां पर पहुँचे उसी तरीके से हम भी अस्पताल में पहुँचे, हमने भी लोगों से हमदर्दी के अलफाज़ कहे और जो भी मदद हम कर सकते थे वह अपनी तरफ से हमने करने की कोशिश की। आप शायद अखबार पढ़ते हों या नहीं लेकिन एक अखबार में यह बात आई है कि आपके एक बहुत बड़े नेता कुतुब मीनार पर पहुँचे, जो शायद आपकी पार्टी में दूसरे नम्बर की पोजीशन रखते हैं, उन्होंने वहां पर सिपाही, चौकीदार जो वहां का था, उसके साथ हंसते हुए फोटो खिचवाई—यह आपकी हमदर्दी का इजहार था।.... **(व्यवधान)**

श्री आर० एन० राकेश (चैल) : उनका नाम बतला दीजिए।

श्री रशीद मसूद : नाम सभी जानते हैं। पार्टी में दूसरी पोजीशन कौन रखता है—यह सभी जानते हैं।....**(व्यवधान)**

नाम लेना मुनासिब नहीं होगा।.... (व्यवधान) आप नाम पूछना ही चाहते हैं तो नाम राजीव गांधी है। आप पूछिए नाम।...(व्यवधान)

श्री गिरधारी लाल व्यास (भीलवाड़ा) : आप गलत बोल रहे हैं।...(व्यवधान)

श्री रशीद मसूद : आप अखबार उठाकर देख सकते हैं।...(व्यवधान) मैं अखबार पेश कर सकता हूं। अगर इसमें राजनीति नहीं लानी थी तो आपको भी वैसी बात यहां पर नहीं कहनी थी। अगर आप जायज आलोचना को भी बन्द करना चाहते हैं तब इस डिस्कशन का क्या मतलब होगा? अगर यह सारी चीजें गलत हैं तो फिर यही होना चाहिए था कि एक वोक प्रस्ताव पास कर दिया जाता और उसके अलावा कुछ नहीं। इस आलोचना का मकसद यह नहीं है कि हम सरकार से कह दें कि इस्तीफा दे दो बल्कि जो घटना बच सकती थी, जिसको बचाने में यह सरकार फेल हुई है उसकी जिम्मेदारी यह सरकार कबूल करे और आइन्दा के लिए ऐसे एक्दामात उठाए जिनसे कि ऐसी घटनायें दोबारा न हों।

यहां पर गृह मन्त्री जी ने अपना बयान दिया और उसके बाद एक बयान कार्पोरेशन की तरफ से आया। यह कोई पहला वाक्या नहीं है, ऐसे मुतवातिर वाक्यात हो चुके हैं कि इस हाउस में एक मिनिस्टर ने एक बयान दिया है और दूसरे मिनिस्टर ने दूसरा बयान दिया है। इसलिए जब इनमें आपस में कोई इत्तहाद नहीं है, कोई वाहमी ताल्लुक नहीं है काम करने में तो उसकी वजह से सारे हादसात होते हैं। अब मैं और ज्यादा वक्त न लेकर दो-चार सवाल पूछना चाहता हूँ।

पहली बात तो यह है कि जब 15 अगस्त के वाकए का जिक्र अखबारों में आ चुका था—हो सकता है पुलिस में उसकी रिपोर्ट न हुई हो—उसके बाद कोई एहतियाती तजावीज करनी चाहिए थी तो क्या कोई ऐसी प्रिकाशन्स आपने लीं जिनसे कि 15 अगस्त को छोटे पैमाने पर जो बातें हुई थी वह दोबारा न होने पायें?

दूसरा सवाल मैं सरकार से यह करना चाहता हूँ कि यह बात सभी को मालूम है कि हर जुम्मे को वहां पर फ्री हो जाता है इसलिए ज्यादा लोग वहां पर आते हैं, और दिन जब 60 आदमियों को ऊपर जाने की इजाजत रहती है तो जुम्मे के दिन 150 आदमियों तक को ऊपर जाने की इजाजत रहती है और उस दिन स्टाफ भी ज्यादा बढ़ा दिया जाता है। जब यहां पर आजकल नुमायश चल रही थी दिल्ली में और हिन्दुस्तान के कोने-कोने से नुमायश देखने के लिए लोग आ रहे थे तो कुदरती बात थी कि वे लोग यहां के अहम मराकिज देखने के लिए जायें—जैसे कि यहां पर जामा मस्जिद है, कुतुब मीनार है, लाल किला है, महात्मा गांधी (बापू) की समाधि है और दूसरी ऐसी जगहें हैं जहां पर सभी लोग जाते तो क्या ऐसे हालात के पेशेनजर कोई ज्यादा इन्तजाम पुलिस का किया गया और अगर किया गया तो कितने लोग वहां ड्यूटी पर मौजूद थे? और अगर मौजूद नहीं थे, तो क्यों नहीं थे?

तीसरी बात यह है कि आपका यह कह देना कि पुलिस वहां पर फौरन पहुंच गई यह हमारे होम मिनिस्टर ने किस आधार पर बात कही है क्योंकि तमाम लोगों का इस बारे में इत्तफाक है कि पुलिस वहां पर तब पहुँची जब लोगों को वहां से हटा दिया

[श्री रशीद मसूद]

गया था। मैं नहीं समझता कि हिन्दुस्तान के इतने बड़े जिम्मेदार ओहदे पर होने के बावजूद भी, दो-ढाई घन्टे के वाक्यात के बाद यहां पार्लियामेंट में, एवान में हमारे होम मिनिस्टर साहब एक बयान लेकर आते हैं, जिसका कि सच्चाई से कोई ताल्लुक नहीं है।

मैं बहुत ज्यादा समय न लेते हुए, सिर्फ दो बातें कहूंगा। एक बात मैं यह कहना चाहता हूं कि जब हम एक तरफ ऐसे महत्वपूर्ण मसले पर, संगीन मसले पर इन्क्वायरी कर रहे हैं, तो यह लाजमी था कि हम उसकी इन्क्वायरी के लिए सीटिंग जज हाई कोर्ट या सुप्रीम कोर्ट का होता। इसलिए इस बारे में बहुत जल्दबाजी की गई है। बहुत सी जगहों पर बहुत से मामलों पर और जैसी कि ब्यानातबाजी अखबारों में हो रही है, मुखतलिफ हकूमत के विंग से मुख्तलिफ बयानात हो रहे हैं, उनको देखकर मुझे अफसोस यह होता है कि इन्क्वायरी से कोई ज्यादा बात होने वाली नहीं है।

तीसरी बात, मैं अपने उधर के साथियों से अदब के साथ अर्ज करना चाहता हूं कि हो सकता है कि बहुत सी बातें वे सही कहते हों, गलत न कहते हों, लेकिन यह सोचना कि हम सब बात गलत कहते हैं, यह बड़ी गलत बात है। (व्यवधान) यह बहुत सीरियस मामला है। मैं तीन दफे एवान में चैलेंज कर चुका हूं, जब यहां पर इल्जाम लगाए गए, तो किसी में हिम्मत नहीं हुई कि वह उसको कबूल कर लें कि हम इस्तीफा देंगे। या वे इस्तीफा देंगे आज वाजपेयी जी ने चैलेंज किया है कि उनकी कमेटी वहां पर गई थी और वे कह रहे हैं कि नहीं गई थी। अगर हम आपस में एवान के लोगों के ऊपर यकीन नहीं करेंगे और एक दूसरे को बेईमान और झूठा कहेंगे, तो मैं समझता हूं कि यह परम्परा के खिलाफ है।

श्री एम० राम गोपाल रेड्डी : झूठ शब्द इस्तेमाल नहीं किया है।

श्री रशीद मसूद : झूठ शब्द का इस्तेमाल किया गया है, आप यहां पर नहीं थे··· (व्यवधान) इसलिए यह वाक्या ऐसा नहीं है कि हम आपस में कोई रूलिंग पार्टी या अपोजीशन को लें, हम सब को मिलकर कोशिश करनी चाहिए कि आइन्दा ऐसा कोई वाक्या न हो। जिनके बच्चे मर गए हैं, उनके घर वालों को जाकर तसल्ली देनी चाहिए और उसकी तरफ भी गवर्नमेंट को काम करना चाहिए।

इन शब्दों के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूं।

[شری رشید مسعود (سہارنپور) :

ادھیکش مہودے - جو واقعہ جمعہ کو ہوا ہے اس کے افسوس کے اظہار کے لئے الفاظ ممکن نہیں ہیں - جس طریقے سے ساری سنستھاؤں نے ساری پارٹیوں نے اور ہندوستان کے سب لوگوں نے اس کا شوک منایا ہے میں سمجھتا ہوں وہ ہماری تہذیب کے مطابق ہے - لیکن اس سدن میں اس ایوان میں جب تک چرچا کے لئے یہ مسئلہ آیا ہے تو اس میں پھر وہ بات کہنا کہ سیاسی رنگ دیا جا

یہ کہہ دینا کہ ہم نے کیا کہا - یہ ان کے لئے مناسب نہیں تھا - جس طریقے سے آپ وہاں پر پہنچے اسی طریقے سے ہم بھی ہسپتال میں پہنچے ہم نے بھی لوگوں سے ہمدردی کے الفاظ کہے اور جو بھی مدد ہم کر سکتے تھے وہاں اپنی طرف سے ہم نے کرنے کی کوشش کی آپ شاید اخبار پڑھتے ہوں یا نہیں لیکن ایک اخبار میں یہ بات آئی ہے کہ آپ کے ایک بہت بڑے نیتا قطب مینار پر پہنچے جو شاید آپ کی پارٹی میں دوسرے نمبر کی پوزیشن رکھتے ہیں انہوں نے وہاں پر سپاہی چوکیدار جو وہاں کا تھا اس کے ساتھ ہنستے ہوئے فوٹو کھنچوائی - یہ آپ کی ہمدردی کا اظہار تھا -

(انٹرپشن)

شری آر - این - راکیش (چیل) : ان کا نام بتا دیجئے -

شری رشید مسعود : نام سبھی جانتے ہیں - پارٹی میں دوسری پوزیشن کون رکھتا ہے - یہ سبھی جانتے ہیں - (انٹرپشن) نام لینا مناسب نہیں ہو گا -

(انٹرپشن)

رہا ہے یا سیاسی بات کہی جا رہی ہے یا پارٹی کی بات کہی جا رہی ہے بالکل مناسب نہیں ہے - یہاں پر کسی کا بھی مقصد کسی پارٹی کو کسی سرکار کو یا کسی دوسرے کو اس وجہ سے ذمہ دار ٹھہرانا نہیں ہے کہ وہ کسی خاص پارٹی سے تعلق رکھتا ہے بلکہ اس لئے کہ ہم ڈیموکریٹک کنٹری میں رہتے ہیں - میں نہیں جانتا اس طرف کے لوگ اس پر یقین رکھتے ہیں یا نہیں لیکن میں یقین رکھتا ہوں - میں اس ہاوس کو یاد دلانا چاہتا ہوں کہ جب بھوپچی کا واقعہ ہوا تھا (تب ہم اس طرف بیٹھے ہوئے تھے) تب کی ڈیبیٹس کو آپ اٹھا کر دیکھ لیجئے ہم نے اپنی سرکار کی آلوچنا کرنے میں کوئی کسر اٹھا نہیں رکھی تھی - لہذا اگر ادھر بیٹھے ہوئے لوگ سرکار کی فیلیور کے لئے اس کی آلوچنا کریں اور یہ کہیں کہ جن لوگوں کی جانیں بچائی جا سکتی تھی ان کو بچانے میں یہ سرکار ناکام رہی تو اس میں کون سا سیاسی رنگ دے کر فائدہ اٹھانا چاہتے ہیں - یہ بات میری سمجھ میں نہیں آئی -

میرے دوست نے جو بات بتائی بہت اچھا کیا انہوں نے مدد کی بہت سے لوگ وہاں پر پہنچے لیکن

کارپوریشن کی طرف سے آیا - یہ کوئی پہلا واقعہ نہیں ہے ایسے متواتر واقعات ہو چکے ہیں کہ اس ہاوس میں ایک منسٹر نے ایک بیان دیا ہے اور دوسرے منسٹر نے دوسرا بیان دیا ہے - اس لئے جب ان میں آپس میں کوئی اتحاد نہیں ہے کوئی باہمی تعلق نہیں ہے کام کرنے میں تو اس کی وجہ سے سارے حادثات ہوتے ہیں - اب میں اور زیادہ وقت نہ لے کر دو چار سوال پوچھنا چاہتا ہوں -

پہلی بات تو یہ ہے کہ جب ۱۵ اگست کے واقعہ کا ذکر اخباروں میں آ چکا تھا - ہو سکتا ہے پولیس میں اس کی رپورٹ نہ ہوئی ہو - اس کے بعد احتیاطی تجاویز کرنی چاہئے تھی تو کیا کوئی ایسی پریکوشنس آپ نے لی - جن سے کہ پندرہ اگست کو چھوٹے پیمانے پر جو بات ہوئی تھی وہ دوبارہ نہ ہونے پائے -

دوسرا سوال میں سرکار سے یہ کرنا چاہتا ہوں کہ یہ بات سبھی کو معلوم ہے کہ ہر جمعہ کو وہاں پر فری ہو جاتا ہے - اس لئے زیادہ لوگ وہاں پر جاتے ہیں اور دن جب ساٹھ آدمیوں کو اوپر جانے کی اجازت رہتی ہے تو جمعہ کے دن تیرہ سو آدمیوں

آپ نام پوچھنا ہی چاہتے ہیں تو نام راجیو گاندھی ہے - آپ پوچھئے نام -

(انٹرپشن)

شری گردھاری لال ویاس (بھیلواڑا): آپ غلط بول رہے ہیں - (انٹرپشن)

شری رشید مسعود : آپ اخبار اٹھا کر دیکھ سکتے ہیں - (انٹرپشن) میں اخبار پیش کر سکتا ہوں - اگر اس میں راج نیتی نہیں لانی تھی تو آپ کو بھی ویسی بات یہاں پر نہیں کہنی تھی - اگر آپ جائز آلوچنا کو بھی بند کرنا چاہتے ہیں تب اس ڈسکشن کا کیا مطلب ہوگا - اگر یہ ساری چیزیں غلط ہیں تو پھر یہی ہونا چاہئے تھا کہ ایک بوک پرستاو پاس کر دیا جاتا اور اس کے علاوہ کچھ نہیں - اس آلوچنا کا مقصد یہ نہیں ہے کہ ہم سرکار سے کہہ دیں کہ استعفیٰ دے دو بلکہ جو گھٹنا بچ سکتی تھی جس کو بچانے میں یہ سرکار فیل ہوئی ہے اس کی ذمہ داری یہ سرکار قبول کرے اور آئندہ کے لئے ایسے اقدامات اٹھائے جس سے کہ ایسی گھٹنائیں دوبارہ نہ ہوں -

یہاں پر گرہ منتری جی نے اپنا بیان دیا اور اس کے بعد ایک بیان

یہاں لیکر آتے ہیں جس کا کہ سچائی سے کوئی تعلق نہیں ہے -

میں بہت زیادہ سمے نہ لیتے ہوئے صرف دو باتیں کہوں گا -

ایک بات میں یہ کہنا چاہتا ہوں کہ جب ہم ایک طرف ایسے مہتو پورن مسئلے پر سنگین مسئلے پر انکوائری کر رہے ہیں تو یہ لازمی تھا کہ ہم اس کی انکوائری کے لئے سٹنگ جج ہائی کورٹ یا سپریم کورٹ کا ہوتا اس لئے اس بارے میں بہت جلد بازی کی گئی ہے بہت سی جگہوں پر بہت سے معاملوں پر اور جیسا کہ بیان بازی اخباروں میں ہو رہی ہے مختلف حکومت کے ونگ سے مختلف بیانات ہو رہے ہیں ان کو دیکھ کر مجھے افسوس یہ ہوتا ہے کہ انکوائری سے کوئی زیادہ بات ہونے والی نہیں ہے -

تیسری بات میں اپنے ادھر کے ساتھیوں سے ادب کے ساتھ عرض کرنا چاہتا ہوں کہ ہو سکتا ہے کہ بہت سی باتیں یہ صحیح کہتے ہوں غلط نہ کہتے ہوں لیکن یہ سوچنا کہ ہم سب بات غلط کرتے ہیں یہ بڑی غلط بات ہے

(انٹرپشن)

تک کو اوپر جانے کی اجازت رہتی ہے اور اس دن اسٹاف بھی زیادہ لگا دیا جاتا ہے - جب یہاں پر آج کل نمائش چل رہی تھی دلی میں اور ہندوستان کے کونے کونے سے نمائش دیکھنے کے لئے لوگ آ رہے تھے تو قدرتی بات تھی کہ وہ لوگ یہاں کے اہم مراکز دیکھنے کے لئے جائیں - جیسے کہ یہاں پر جامع مسجد ہے قطب مینار ہے لال قلعہ ہے مہاتما گاندھی (باپو) کی سمادھی ہے اور دوسری ایسی جگہیں ہیں جہاں سبھی لوگ جاتے تو کیا ایسے حالات کے پیش نظر کوئی زیادہ انتظام پولیس کا کیا گیا اور اگر کیا گیا تو کتنے لوگ وہاں ڈیوٹی پر موجود تھے اور اگر موجود نہیں تھے تو کیوں نہیں تھے -

تیسری بات یہ ہے کہ آپ کا یہ کہہ دینا کہ پولیس وہاں فوراً پہنچ گئی یہ ہمارے ہوم منسٹر نے کس آدھار پر بات کہی ہے کیونکہ تمام لوگوں کا اس بارے میں اتفاق ہے کہ پولیس وہاں پر کب پہنچی جب لوگوں کو وہاں سے ہٹا دیا گیا تھا - میں نہیں سمجھتا کہ ہندوستان کے اتنے بڑے ذمہ دار عہدے پر ہونے کے باوجود بھی دو ڈھائی گھنٹے کے واقعات کے بعد یہاں پارلیمنٹ میں ایوان میں ہمارے ہوم منسٹر صاحب ایک

تسلی دینی چاهئے اور اس کی طرف بھی گورنمنٹ کو کام کرنا چاهئے - ان شبدوں کے ساتھہ میں اپنی بات سماپت کرتا ہوں -]

श्री भीकूराम जैन (चांदनी चौक) : डिप्टी स्पीकर साहब, तीन दिन पहले राजधानी दिल्ली में निःसन्देह एक बहुत ही दर्दनाक वाक्या पेश आया और उसके लिए आज वाजपेयी जी ने और हमारे दूसरे दोस्तों ने यहां पर यह बहस जारी की है।

असल में उसी रोज वाक्या के फौरन बाद होम मिनिस्टर के बयान के बाद इस सदन को और दूसरे सदन को स्थगित हो जाना और शोक प्रस्ताव पास करना इस बात का द्योतक है कि पार्लियामेंट के दोनों एवान के मैम्बरों ने बहुत तकलीफ मानी है और उस हादसे की जो बदकिस्मती से अचानक पेश हुआ है और वह भी इस लिए कि बहुत छोटे-छोटे बच्चे, स्कूल और कालेज के बच्चे, जो कि हिन्दुस्तान की ऐतिहासिक इमारत कुतुब मीनार को देखने आए थे, उसी जगह पर यह हादसा पेश आया। इसलिए बहुत तकलीफ की बात मुझे भी है और यह ऐसा वाक्या है जिसमें 45-46 बच्चों का निधन हुआ, जो बहुत ही दर्दनाक है। हमारे अपोजीशन के तमाम नेता लोगों ने उस तरफ आज ध्यान आकर्षित किया है और गालिबन इस मकसद से इसका फायदा उठाकर के इस वाक्ये से जो क्षति पहुँची है, आईन्दा ऐसे कदम उठाये जायें कि यह वाक्या दोबारा न होने पाए, इस जगह या किसी और जगह पर।

बार-बार इस बात का जिक्र किया गया है कि इसका सियासत से कोई ताल्लुक नहीं है, लेकिन बदकिस्मत बात यह है कि

یہ بہت سیریس معاملہ ہے میں تین دفعہ ایوان میں چیلنج کر چکا ہوں جب یہاں پر الزام لگائے گئے تو کسی میں ہمت نہیں ہوئی کہ وہ اس کو قبول کر لیں کہ ہم استعفیٰ دیں گے یا وہ استعفیٰ دیں گے آج واجپئی جی نے چیلنج کیا ہے کہ ان کی کمیٹی وہاں پر گئی تھی اور وہ کہہ رہے ہیں کہ نہیں گئی تھی اگر ہم آپس میں ایوان کے لوگوں کے اوپر یقین نہیں کریں گے اور ایک دوسرے کو بے ایمان اور جھوٹ کہیں گے تو میں سمجھتا ہوں کہ یہ پرم پرا کے خلاف ہے -

شری ایم - رام گوپال ریڈی : جھوٹ شبد استعمال نہیں کیا ہے -

شری رشید مسعود : جھوٹ شبد کا استعمال کیا گیا ہے آپ یہاں پر نہیں تھے

(انٹرپشن)

اس لئے یہ واقعہ ایسا نہیں ہے کہ ہم آپس میں کوئی روالنگ پارٹی یا اپوزیشن کو لیں ہم سب کو مل کر کوشش کرنی چاہئے کہ آئندہ ایسا کوئی واقعہ نہ ہو جن کے بچے مر گئے ہیں ان کے گھر والوں کو جا کر

सियासत के अलावा और कोई दूसरी बात नहीं कही गई है। श्री बागड़ी जी चले गए, उन्होंने इस्तीफे का जिक्र किया है और उसके अलावा उन्होंने कोई बात नहीं कही थी। जिक्र कर रहे थे, कि होम मिनिस्टर को इस्तीफा देना चाहिए, हकूमत को इस्तीफा देना चाहिए और वाजपेयी जी ने भी भाषण शुरू करते वक्त एक बात कही थी कि इसकी जिम्मेदारी किसी पर डालनी चाहिए तो वह हकूमत है। मेरा ऐसा ख्याल है कि इस वाक्ये को डिस्कस करने के लिए सबसे जरूरी चीज थी कि यह वाक्या क्यों पेश आया और इस वाक्ये के पेश न होने के आइन्दा क्या कदम उठाये जायें।

17.30 hrs

RE-ANNOUNCEMENT HALF-AN-HOUR DISCUSSION

MR. DEPUTY-SPEAKER : It is 5-30 p. m. I have to make an announcement, I have to inform the Houset hat Shri B. V. Desai in whose name Half-an-Hour Discussion is listed for to-day is not present. Therefore, discussion on Qutab tragedy may continue after 5-30 p. m. also.

I hope the House agrees.

SOME HON. MEMBERS : Yes.

17.31 hrs.

RELEASE OF MEMBER

MR. DEPUTY-SPEAKER : I have to inform the House that Speaker has received the following wireless message dated 5 December 1981 from the Superintendent, District Jail, Indore (M.P.) to-day :

"One hundred thirty six agitators of Bharatiya Janata Party are released from Jail to-day, the 5th December 1981, including one Member of Parliament, Shri Phool Chand Verma by order of S.D.M., Sawer."

DISCUSSION *RE*-TRAGIC DEATH OF 45 PERSONS AND INJURIES TO SEVERAL OTHERS AT THE QUTAB MINAR ON DECEMBER 4, 1981 *Contd.*

MR. DEPUTY-SPEAKER : Now, Shri Bhiku Ram Jain.

श्री भीकू राम जैन : डिप्टी स्पीकर साहब, मैं यह अर्ज कर रहा था कि इस दुःखद वाक्ये का जिक्र करते हुए वाजपेयी जी और हमारे दूसरे दोस्तों ने, मुखालिफ पार्टियों के दोस्तों ने, अभी तक यह नहीं बतलाया कि अगर इस किस्म का वाक्या आइन्दा हो तो क्या कार्यवाही करनी चाहिये, सिवाय इसके कि गवर्नमेन्ट ने यह नहीं किया, वह नहीं किया, गवर्नमेन्ट जिम्मेदार है, गवर्नमेन्ट को इस्तीफा दे देना चाहिए। वाजपेयी जी ने नैतिकता का जिक्र किया, लेकिन यह नहीं बतलाया कि उन 28 महीनों में उन्होंने नैतिकता का क्या सुबूत दिया था ? उस जमाने में भी इस तरह के वाक्यात हुए थे··· आप चाहेंगे तो मैं लिस्ट दे दूंगा··· (व्यवधान)··· आप कहते हैं एक दफा···

MR. DEPUTY-SPEAKER : This is not the time to list all those occasions.

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : कौन सा वाक्या है, बतला दो ?